उमाकान्त

उमाकान्त मैथिलीक यशस्वी रचनाकार छथि। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक ढंगा (हरिपुर) गाममे 17 जनवरी, 1945 मे भेलनि। मैथिलीमे एम. ए. कयलाक बाद एम. एल. एस. एम. कालेजमे प्राध्यापक भेलाह। सीताक चरित पर पी-एच. डी. कयलनि। ओही कालेजमे मैथिलीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवानिवृत्त भऽ आब पूर्णत: साहित्य-रचनामे दत्तचित्त छथि।

उमाकान्त मैथिली साहित्यमे हास्य -व्यंग्यक रचनाकारक रूपमे प्रशस्त भेलाह। प्रो. हरि मोहन झाक स्मरण करबैत हिनक हास्य -व्यंग्य पुस्तक 'बाबाक विजया' एहि विधाक महत्वपूर्ण कृति अछि। हिनक कथा-संग्रह 'यर्थाथ' तथा नाटक 'सीता' बेस चर्चित भेल अछि। 'अर्पण' नामक वार्षिक स्मारिकाक बीस वर्ष धरि ई सम्पादन कयने छथि। अन्य स्मारिका तथा पत्रिकाक सेहो ई सम्पादन कयलनि अछि। हिनक निबन्ध-संग्रह 'अपन बात' समाचार -पत्रमे प्रकाशित स्तम्भ-लेखनक पुस्तकाकार रूप थिक।

प्रस्तुत कथा -'आरम्भ' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। ई एकटा टेम्पो चालकक कथा अछि। ओकर असली नाम जे होइक, लोक ओकरा 'क्रैक' कहैक। ओ अपनहुँ एहि नामकेँ स्वीकारि लेने छल। आचरणसँ सेहो 'क्रैक' नामकेँ सार्थक करैत रहैत छल। एक दिनक घटना अछि जे एकटा नवयुवक ओकर टेम्पो पर आबि बैसि गेलैक। कनेक कालक बाद एकटा महिला सेहो बैसलीह। ओ युवा व्यक्ति अभद्र व्यवहार करय लागल। महिला असहज भऽ गेलीह। टेम्पो चालक क्रैक ओहि नवयुवककेँ मना केलकैक, नहि मानला पर ओकरा संग कठोर व्यवहार कयलक। अपन जान पर खेलि कऽ ओहि युवा छौंड़ाकेँ अन्तत: टेम्पोसँ उतारिये कऽ छोड़लक।

नैतिकता आ कर्त्तव्यबोध मनुष्यक विशेषता थिक। ककरो व्यवसायसँ ओकर व्यक्तित्वकेँ नापल नहि जा सकैत अछि। ई कथा व्यक्तिक मानवीय-चेतनाक एकटा ठोस उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

क्रैक

साफे बताह अछि। हरदम दाँत चियारने बतिसी देखबैत रहैए, हँ-हँ-हँ करैत रहैए। झुमैत गीत गबैत चलबैत रहैए टेम्पो। तेहन-तेहन अकट्ठ बात करैत रहैए पसिंजर सभक संग जे सभकेँ हँसा दैए। अनेरो दोसर टेम्पो ड्राइभरकेँ चलितेमे उकठपना क' दैए आ हँस' लगैए, हँसोड़ ड्राइभर तँ हँसि दैए किन्तु पिताह प्रवृत्तिक ड्राइभर तामसे गारि पढ़' लगैत छै। बेसी टेम्पोबला एकरा 'क्रैक' कहैत छै। आब एकर नामे क्रैक भऽ गेल छै। क्रैक तँ अछि मुदा कोनो बातक आमेख-इरखा नै।

टेम्पोचालक अछि, नाम नै बुझल अछि। मानि लिय' जे ओकर नाम क्रैक भेल। सभ जखन क्रैक कहि सम्बोधित करैत छै तँ हमरा-अहाँकेँ क्रैक कहबामे कोन हर्ज?

हमरा प्रसन्नता होइए ओकर टेम्पोपर चढ़लासँ। डेरा आ कालेजक दूरी तीन किलोमीटरसँ उपरे हैत, कम नहि । नितो आबा-जाहीक सहारा वैह अछिं छुट्टीयो दिन कऽ जँ मैथिलीक कोनो बैसार की कवि सम्मेलन अथवा साहित्यिक गोष्ठी भेल, होइए बेसी दरभंगेमे तँ से जेबाक भेल तँ टेम्पो शरणमक् अतिरिक्त दोसर चारा नहि। रिक्शासँ जैब से साधन्स आर्थिक दृष्टिएँ अछि नहि। तखन तँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन। कालेज जेबा-अएबाक क्रममे अधिक काल एक ने एक पीठ क्रैक पकड़ा जाइते अछि। हमरा ओ बड़ नीक लगैए। नीक लगबाक कारण अछि जे ओ निर्विकार -निश्छल अछि। आम पसिन्जर संग ओकर व्यवहार देखि लगैए जेना ओकरा हृदयमे कतौ खोँच-खाँच नहि छै। हमरा सभ जकाँ बहत्तरि हाथक अँतरी नै छै। छै मे छै की त' हरदम बत्तीसी बेपर्द रहैत छै। दुनू ठोर दुनू कात कोसी नहरिक बान्ह जकाँ हँसीक धाराके समेटने। मुहँक तेहेन आकृति छै जे देखिते ठोरपर मुस्की छिड़िया जायत। टेम्पो चलबैत गर्दभ स्वरमे जैह फुरा गेलै सैह गबैत मस्तीमे चलैत रहैए। जहाँ पसिन्जर देखलक, रुकल- आउ 'शर', आउ 'शर' ! कहि क' गाड़ीपर चढ़ा लेलक, विदा भ' गेल। एकटा और खूबी छै ओकरामे। ओ समदर्शी जकाँ मौगी-पुरुखमे भेद नहि करैए, सभकेँ 'शरे' कहैए। पढ़ल-लिखल, मूर्ख, देहाती-शहरी, नेता-प्रणेता, नेनासँ बूढ़ सभकेँ 'शरे' कहैए - आउ 'शर' कत' जेबै ? हँ, बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए आ गीतो बेसी मैथिलीएक गबैत रहैए। हमरा तँ आर

बेसी नीक लगैए क्रैक। ओकरामे एकटा और विशेषता छै जे सवारीक मोटा-चोटा, बोरिया, ब्रीफकेश आ कि कोनो भारी समान अपनेसँ उठा क' रखैए टेम्पोपर आ उतर' कालमे उतारियो दैए, मुदा किराया तँ बेसी ककरोसँ एकोटा पाइ नहि लैए। सेवाक मूल्य ल' सकैत छल से नहि लैत अछि।

क्रैक ठीके क्रैक अछि। अर-दर गबैत खूब रेसमे टेम्पो चलबैत रहैए। अगल-बगलमे जाइत बूढ़ा होथि कि बूढ़ी, एकाएक रोकि बाबा परणाम .... दाइ परणाम तेहेन पोजमे कहि चलि दैए जे बिना हँसने नहि रहल जायत। सभ हँसि दैत छै, जकरा कहलक से पित्ते माहूर भऽ गारि पढ़' लगैए। ओकरा जेना मजा अबैत होइक। कोनो-कोनो टेम्पोचालक पसिन्जरकेँ भड़का दैत छै। कहि देलक हे ओइ टेम्पो पर नै चढ़ूँ, क्रैक छै, कतहु एक्सिडेंट करा देत ... सब दिन एक्सिडेंट करिते अछि। नाहकमे माथ-कपार फूटि जैत। मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि नै करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

ओहि दिन हम पान खा क' कालेजसँ डेरा विदा होयबा पर रही। सड़कक कातमे एकटा टेम्पो ठाढ़ देखलियै। नजरि दौड़ौलहुँ तँ देखैत छी जे एकटा डिब्बामे सँ टेम्पोमे तेल ढारि रहल अछि। तेल ढारल भ' गैले । हम एकटा मित्रक संग गप्पक समापन करबा पर रही। डिब्बा गाड़ीमे राखि हमरा ओ कहैए-'शर' यौ ..... शर, जेबै लहेरियासराय? चेला हाजिर अछि। हम सकारात्मक उत्तर द' बैसबाक लेल जहाँ जाइत छी कि ओ क्रैक हमरा संगीकेँ कहैए हए . ... हए .....शरकेँ फँसा लेलियै। हमर मित्रकेँ बतहाक गप्प सुनि हँसी लागि गेलनि, पानोबला हँस' लागल। हम हँसैत टेम्पोपर बैसि गेलहुँ। क्रैक गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

अएँ हौ, एत' गाड़ी लगौने छलहए ? हम पूछि देलियै।

तेल साफ भ' गेलै 'शर' । एतहि कातमे लगा देलियै, डिब्बा लेलहुँ, पेट्रोल टंकी गेलहुँ , तेल आनि क' खोराकी द', चला परदेशी। शर .....! बिना खाना-खोराकीकेँ मनुक्ख तँ काज कैए ने सकैए, ई तँ गाड़ी छै, आ कि नै शर ?

आह! छैहे की। पेटे लेल तँ दुनिया हरान अछि।

एतेक गप्प होइते अछि कि सड़कक खाधिमे जरकिंग भेल जे मुँहे भरे खस' लगलहुँ, मुदा बाँचि गेलहुँ। एहन कतौ सड़क होइ। सड़क आ खाधिमे घुट्ठा सोहार नै देखने छलहुँ। गुण्डा -आदंकीक संगति भले आदमी संग जकाँ । लुटि लेलकै बिहारकेँ - हमरा बजा गेल।

शर ! सरकारेकेँ कतेक दोख देबै ? लाख-करोड़क महल बनौने छै, पानि सड़के पर बहबै छै। हमरा सबहक दिमाग ठीक के करतै ?

हम क्रैकक गप्प सुनि चुप भ' गेलहुँ। कतेक सटीक बात बाजलए।

तावतमे टेम्पो स्टेशन लग आबि गेल। एकटा लफुआ-गुण्डा छौंड़ा छड़पि क' चलितेमे चढ़ि गेलै आ टेम्पोचालकक कातमे बैसि गेलै। करीब दू सय डेग और आगू टेम्पो बढ़ल छल कि एक पूर्णयौवना नायिका हाथ देखोलनि। टेम्पो रोकलक, ओ चढ़ि गेली। तीनसिट्टापर एककात हम दोसरकात ओ महिला। सुरेबगर मुहँक काट-छाँट, गहुमियाँ गोराइ, सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा, बीस-पचीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा -गरिमाकेँ शिखरपर पहुँचवैत, बुझाइत छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह ?

ई की ? लफुआ-गुण्डा छौंड़ा जे क्रैकक बगलमे बैसल छल, नीचा उतरि ओहि महिलासँ सटि क' बैसि गेल। ओकर चालि-प्रकृति देखिते युवतीक सौन्दर्य पर मेघक कारी-सियाह टिक्कड़ि आबि क' घेरि लेलकै। हँसैत आकृतिपर आदंक सियाह पसरि गेलनि।

हम छनेमे ई की देखि रहल छी? बुझायल जेना युवतीक आँखि अपन रक्षाक याचना क' रहल अछि। टेम्पोचालकक आँखि लाल भ' गेलै। खिसिआइत बाजल- उतरो यहाँ से - उतरते हो या, नहीं उतरेगा तूँ .. ? कहैत रोकि देलक टेम्पो , बन्द क' देलक।

कोनो प्रभाव नहि। अड़ि क', अकड़ि क' बैसल रहल ओ गुण्डवा। महिलाक ठोरपर फिफड़ी पड़ैत, सहमलि सहटि क' ससरली हमरा दिस। ओहि गुण्डबाक प्रवृत्ति देखि हमरो ठंढायल खूनमे सनसनाहटि होब' लागल छल। नारीक रक्षार्थ ओकर आवरूक सुरक्षाक निमित जानोपर आफद झेल' पड़त तँ ताहिमे कोनो हर्ज नहि। इएह तँ पुण्य काज हैत। से सोचि तद्वते अपनाकेँ तैयार क' रहल छलहुँ मोने मोन।

तूँ की चाहैत छएँ? भले आदमीक काज होउक तँ तुरत उतरि जो .... नै तँ आइ जे ने से भ' जेतौ।

वैसाख मासक तप्त किरणसँ त्रसित लोक किएक बहरायत ? अनेरोक सुनसान जकाँ। गर्मीसँ आउल-बाउल मोन, घमायल शरीर ताहि परसँ सूर्यक प्रचण्ड धाहीसँ अकच्छ भेल मोन। तखन ई घटना एकटा विचित्र सन स्थिति उत्पन्न क' देलक।

'' नहीं उतरोगे तुम ..... ? दिखा दें क्या होता है लफुआगर्दी का मजा ..... ?

गुण्डबा ओत' सँ उतरि क्रैक चालकक बगलमे बैसि कानमे किछु फुसफुसा क' कहलकै। टेम्पोबला एकेठाम नकारात्मक मूड़ी डोलबैत रहल। ओहिकालमे म्यूजियमक गेटसँ आठ-नौ गोटे बाहर आबि सड़कक कातेमे बतिआय लागल। टेम्पोचालक क्रैकक साहस बढ़लै। तमकि क' बाजल - हम नै जैब, तोँ हमरा गाड़ी परसँ उतरै छएँ की नहि ?

हल्लागुल्ला करोगे तो समझ लेना । टेम्पो सहित तुमको गायब कर देंगे।

तोरा जे करबाक होउक से क' लिहएँ। हम बूझि लेब। अखन तोँ गाड़ीसँ उतरै छएँ की करियौ हल्ला। ..... दौड़े जा हौ लोक सभ।

ओ गुम्हरैत चुप्पी सधने भागल मुदा ओकर चुप्पी आ आँखिक मुद्रा चेतौनी द' क' गेल क्रैककेँ ।

टेम्पोचालक क्रैककेँ बुझेलैक जेना बड़का संकटसँ उबरल होय। गाड़ी फेर स्टार्ट केलक आ चलि देलक - लहेरियासराय दिस। हम ओकर बहादुरीक धान्यवाद देब' लगलहुँ त' ओ हमर प्रशंसाकेँ लोकैत कह' लागल-

शर! हम दोसरक माय-बहिनकेँ अपन माय-बहिन नहि बुझबै तँ कतेक काल टिक सकबै? दोसराक इज्जत ल' क' चलबै त' ओकर रक्षामे प्राणे चलि जेतै नै परबाहि नै।

क्रैकक उतर सुनि ओकर दायित्व आ कर्त्तव्य बोधक आगू हम बौना बनल रहलहुँ। अजस्र स्नेह सागर उमड़ि आयल ओकरा प्रति। ओहि महिलाक सुखायल ठोरक लालिमा फरिच्छ होब' लागल छल। ओहो बजली तँ किछु नै मुदा आभारसँ दबलि लागि रहल छली।

टेम्पो बेँता चौक आयल। महिला उतरली, पाइ देलथिन। क्रैक किन्नहुँ आइ पाइ लेबाक लेल तैयार नहि छल। बहुत हमर आग्रह आ महिलाक डबडबायल आँखि पर विवश भ' किराया लेलक। टेम्पोसँ उतरि जाय तँ लगलि किन्तु पलटि-पलटि ताकथि टेम्पोबाला दिस। हमहूँ दस डेग आगू आबि उतरलहुँ । क्रैक भाव विगलित होइत बाजल -

आब नै चलैब टेम्पो। माथा गड़बड़ा गेलै 'शर'। जाबत शान्ति नहि भेटतै तँ हँसब-बाजब की, दू कौर खाओ ने हेतै 'शर' । एते दिन क्रैक छलहुँ नहि, मुदा आब कहीं भ' ने जाइ।

शब्दार्थ

क्रैक	-	बताह , झोंकाह
बतिसी	-	बतीसा दाँत
उकठपना	-	उपद्रव
आमेख-इरखा	-	अन्यथा भाव , दु:ख वा क्रोधक भाव
साधन्स	-	हिम्मति
निर्विकार	-	निश्छल - निर्मल
खाँच-खाँच	-	शरीरमे भेल दाग
गर्दभ स्वर	-	गदहाक स्वर
समदर्शी	-	सभ पर समान दृष्टि रखनिहार
अर-दर	-	अंटसंट
पित्ते माहुर	-	तामसे विष भेल
ऐक्सिडेन्ट	-	दुर्घटना
खाना - खोराकी	-	भोजन
घुट्ठा सोहार	-	घनिष्ठ सम्बन्ध, हेल-मेल
सुरेबगर	-	सुन्दर
आउल-बाउल	-	तंग-तंग, व्याकुल
फरिच्छ	-	साफ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'क्रैक' शीर्षक कथाक कथाकार छथि -

(क) उमाकान्त (ख) विभारानी

(ग) अशोक (घ) भाग्यनारायण झा

(ii) उमाकान्तक रचना अछि -

(क) भोजन (ख) क्रैक

(ग) चन्द्रमुखी (घ) पर्यावरण

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मानि लिय' जे ओकर ..... क्रैक भेल।

(ii) अर-दर गबैत खूब रेसमे ..... चलबैत रहैए।

(iii) ..... गाड़ी स्टार्ट क' चलि पड़ल।

3. शुद्ध/अशुद्ध पाँतीकेँ चिह्नित करू -

(i) क्रैक हरदम दाँत चियारने बत्तिसी देखबैत रहैए।

(ii) बेसी काल ओ एकछाहा मैथिली बजैए।

(iii) क्रैक टेम्पो नहि चलबैत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) टेम्पोचालकक नाम की अछि ?

(ii) टेम्पोचालक 'क्रैक' नामसँ जानल जाइत छथि कियैक ?

(iii) क्रैक बेसी काल कोन भाषा बजैए ?

(iv) क्रैक समदर्शी अछि । कोना ?

(v) क्रैक कोना एकटा महिलाक इज्जति बचओलक ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'क्रैक' कथाक सारांश लिखू।

(ii) क्रैक कथाक कथ्य स्पष्ट करू।

(iii) क्रैकक चरित्र चित्रण करू।

(iv) टेम्पो पर सवार महिलाक सौन्दर्यक वर्णन करू।

(v) पठित पाठक आधार पर क्रैक अपन दायित्व आ कर्त्तव्यक पालन कोना कयल ?

6. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) मुदा ओ अछि जे कोनो परबाहि ने करैए। ककरोसँ कुन्नह नै रखैए, अपन काज पर डटल रहैए, ओहिना हँसैत। कखनो मोन छोट नहि करैए।

(ii) सुरेबगर मुँहक काट-छाँट , गहुमियाँ गोराइ , सोटल पोछल-पाछल बाँहि, बान्हल हाड़-काट, चमचमाइत चकाचक चेहरा , बीस-पचीस वर्षीया नायिका, सिन्दूरक आभा सौन्दर्यक महिमा-गरिमाके ँ शिखर पर पहुँचबैत , बुझाइल छल जे कृष्णक राधा छितितल लावनि सार इएह तँ ने छल हेतीह'?

गतिविधि :

(i) **पाठमे प्रयुक्त निम्न शब्दक अर्थ लिखू :**

परिच्छ, गुम्हरैत, बत्तीसी, पित्ते माहुर, खोराकी

(ii) एहि कथाक सार्थकता पर विचार करू।

(iii) **निम्नलिखित मुहावराक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू :**

बहत्तरि हाथक अँतरी , पित्ते माहुर, डबडबायल आँखि

निर्देश -

(i) शहरमे आर्थिक दृष्टिएँ टेम्पोए सभसँ पैघ साधन अयबा-जयबा लेल अछि-आन-आन साधनक चर्चासँ शिक्षक छात्रकेँ आवागमनक स्थितिसँ अवगत करावथि।

(ii) क्रैक जकाँ निर्विकार -निश्चल भावसँ अपन कर्त्तव्य समाजमे सब गोटे करथि। समाज सेवाक भावनाक चर्चा शिक्षक छात्रक बीच करथि।

रत्नेश्वर मिश्र

'डॉ० रत्नेश्वर मिश्र इतिहासकार पहिने भेलाह, मैथिली साहित्यक रचनाकार बादमे। हिनक जन्म पूर्णिया जिलाक विष्णुपुर गाममे 1 फरवरी, 1945 कँ भेल छनि। ई मैट्रिकुलेशन कयलनि नेतरहाट विद्यालयसँ। एम. ए. आ पी-एच. डी. कयलाक बाद इतिहासक विद्वान प्राध्यापकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगामे इतिहासक युनिवर्सिटी प्रोफेसर आ विभागाध्यक्षक पदसँ 2005 ई0 मे सेवा-निवृत भेलाह अछि।

रत्नेश्वर मिश्रकेँ साहित्यसँ अभिरुचि प्रारम्भे सँ छनि। इतिहास आ साहित्य-दुनू क्षेत्रमे हिनक रचनाक पुस्तकाकर प्रकाशन कम छनि, मुदा जतेक छपल छनि से पर्याप्त छनि। इतिहासकारक रूपमे मिथिला आ नेपाल पर हिनक लेखन गहन विमर्शक विषय बनल अछि। साहित्य अकादेमी, नयी दिल्लीसँ प्रकाशित भवभूति, तमिल साहित्यक इतिहास आदि अनुवाद - पोथी बेस प्रशंसित भेल अछि। हालेमे हिनक सुरेन्द्र झा सुमन लिखित मैथिली उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' क अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित भेल अछि। मैथिलीमे निबन्धकार, समीक्षक आ अनुवादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि।

प्रस्तुत निबन्धमे रत्नेश्वर मिश्रक इतिहासकार आ साहित्यकारक समन्वित रूप ध्येय अछि। स्वतंत्रता संग्रामक इतिहास जानब, अपन देशक संविधानसँ संक्षेपोमे परिचित होयब प्रत्येक छात्रक कर्त्तव्य थिक। सोझ सरल भाषामे आधिकारि विद्वान एही आवश्यकताकेँ बुझि रखलनि अछि।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम एवं संविधानक रूपरेखा

स्वतंत्रता मानव जातिक जन्म सिद्ध अधिकार थिक। एकरा प्राप्त करबाक लेल एवं सदा सुरक्षित ओ निरापद रखबाक लेल महान् बलिदान ओ त्यागक आवश्यकता होइत अछि। जे राष्ट्र एहि प्रकारक बलिदान ओ त्याग कऽ सकल सैह स्वतंत्रता प्राप्त कऽ सकल अछि आ अपन स्वतंत्र जीवन बिता रहल अछि।

कालक गतिमे भारत अतीत कालमे अपन अनेक दुर्बलताक कारणे अपन स्वतंत्रता गमा बैसल। किन्तु ताही संग विदेशी सत्ताकेँ उखाड़ि कऽ फेकि देबाक सेहो निरन्तर संघर्ष चलैत रहल। किन्तु ओ संघर्ष संघटित जन संघर्ष नहि बनि सकल।

सामूहिक जनसंघर्षक रूपमे विद्रोहक पहिल ज्वालामुखीक विस्फोट भेल छल 1857 इसवीमे। एकरा सिपाही-विद्रोह कहल जाइछ मुदा ई छल भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक आदम्ब इच्छाशक्तिक अभिव्यक्ति। एक मइ 1857 मे मेरठक सैनिक छावनीमे अंगरेज सभक विरुद्ध एक सैनिक मंगल पाण्डे द्वारा दागल गेल बन्दूकक अबाज दिल्लीसँ कलकता धरिक इस्ट इंडिया कम्पनीक सैनिक छावनीकेँ दलमलित कऽ देलक। सर्वत्र भारतीय सैनिक अंगरेजक विरुद्ध स्वतंत्रताक बिगुल बजा देल।

मेरठक एहि सिपाही-विद्रोहक चिनगी दिल्ली पहुँचल। बहादुरशाह द्वितीय अपनाकेँ हिन्दुस्तानक सम्राट् घोषित कऽ देलक। सिपाही सबहक मनोबल बढ़लैक। अन्ततः ओ सब दिल्ली पर अधिकार कऽ लेलक। एकरा बाद तँ एहि विद्रोहक लहरि अनेक स्थानमे पसरि गेल। कुँवर सिंह जगदीशपुरमे, रानी लक्ष्मीबाइ झांसीमे तथा नाना साहब कानपुरमे विद्रोहक नेतृत्व कयलनि। एहिना आनो-आनो स्थानमे विद्रोहाग्निकेँ प्रज्ज्वलित कयल गेल। एक वर्षसँ अधिक धरि ई संघर्ष चलैत रहल, मुदा अन्ततः असफल भऽ गेल। संघर्षक हेतु अपेक्षित योजनाबद्ध कार्य-पद्धति, संगठन-शक्ति तथा नेतृत्व-क्षमताक अभावमे विद्रोह अपन अभीष्ट धरि नहि पहुँच सकल। तइयो विद्रोही सभक साहस एवं इच्छाशक्तिक दृढ़ता प्रशंसनीय छल। विदेशी शासनसँ लड़बाक लेल जनमानसकेँ तैयार करबाक दृष्टिकोणसँ एकर विशेष महत्व अछि। ओना, विदेशी शासक

प्रति लोकक मनमे क्षोभ आ घृणा पहिनेसँ छलैक, मुदा ओ मुखर भेल एही विद्रोहक अवसर पर।

1857 क विद्रोह भने असफल भऽ गेल हो, मुदा सम्पूर्ण देशमे राजनीतिक चेतना जगयबामे ओ सफल रहल। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना जागृत राजनीतिक चेतनाक परिणाम छल। दिसम्बर, 1885 मे किछु राजनीतिक कार्यकर्त्ता सभ एकत्र भेलाह आ एहि राष्ट्रीय संस्थाक न्यों रखलनि। अवकाश-प्राप्त अंग्रेज आइ० सी० एस० अधिकारी ए० ओ० ह्यूम कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह। विदेशी शासक विरुद्ध बढ़ैत जनाक्रोशकेँ जे युवाशक्ति नेतृत्व प्रदान कऽ रहल छल तकरा संगठित कऽ अपना ढंगेँ उपयोग करबाक जे इच्छा ए० ओ० ह्यूमक मनमे रहल होइन, मुदा से भऽ नहि सकलनि। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राष्ट्रीय एकता आ राष्ट्रवादक भावनाकेँ जगयबामे लागि गेल। कांग्रेसक प्रथम अध्यक्ष डब्ल्यू० सी० बनर्जीक कहब छलनि -"कांग्रेसक उद्देश्य भ्रातृत्व भावसँ भारतीय जनताक मध्य पसरल जाति, वर्ण तथा क्षेत्रीय पूर्वाग्रहकेँ समाप्त करब थिक। देशक लेल काज करयवला लोकमे भ्रातृत्वभाव तथा मैत्री-सम्बन्धकेँ दृढ़ करब सेहो एकर लक्ष्य थिक"। स्पष्ट अछि जे कांग्रेसक तत्कालीन नेता सभक ध्यान जनतामे राजनीतिक चेतना उत्पन्न करबा दिस बेसी छलनि। ओ सभ उपनिवेशवादक विरुद्ध राष्ट्रवादी विचारधाराक विकास पर जोर देब आवश्यक बुझलनि। उनैसम शताब्दीक अंत धरि कांग्रेस एहि पथ पर अग्रसर रहल। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, मदनमोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले आदि राष्ट्रवादी नेता सभक प्रयास आ प्रेरणासँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस संपूर्ण देशमे एकटा आन्दोलनकारी शक्ति आ मंचक रूपमे प्रतिष्ठत भऽ गेल।

बीसम शताब्दीक प्रारंभ बंग-भंग आ स्वदेशी आन्दोलनसँ भेल। अंग्रेज सरकारक 1905 ई0 मे बंगाल-विभाजनक निर्णय प्रशासनिकसँ बेसी राजनीतिक कारणसँ प्रेरित छल। तेँ एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल। बंगाल-विभाजनक विरोध बंगाले धरि सीमित नहि रहल: संपूर्ण देशमे पसरि गेल। विरोधकेँ प्रभावकारी बनयबाक लेल नेता-लोकनि स्वदेशी आन्दोलनक कार्यक्रम चलौलनि। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, सैयद हैदर रजा, गोपालकृष्ण गोखले, विपिनचन्द्र पाल तथा अरविन्द घोष सदृश नेतागण एहि आन्दोलनक नेतृत्व कऽ रहल छलाह। एहि आन्दोलनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम ई भेल जे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्वराजक मांग करऽ लागल। कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशन (1906 ई0) में दादाभाइ नौरोजी अपन अध्यक्षीय भाषणमे स्पष्ट

कहलनि जे कांग्रेसक उद्देश्य अपन सरकार गठित करब थिक।

किन्तु, एहि समय धरि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे दू विचारधाराक संघर्ष शुरू भऽ गेल छल। किछु लोक नरमपंथी छलाह तँ किछु गरमपंथी। गरमपंथी लोकनि व्यापक जनान्दोलनक पक्षधर छलाह। राजनीतिक स्वतन्त्रताक प्राप्ति हुनक लक्ष्य छलनि आ एहि लेल बहिष्कार आन्दोलनकेँ ओ सभ असहयोग आन्दोलनमे परिणत करऽ चाहैत छलाह। किन्तु, नरमपंथी सभ एहि पक्षमे नहि छलाह। अन्य अनेक बिन्दु पर सेहो मतभेद छल। यैह कारण छल जे 1907 मे सूरत अधिवेशनमे कांग्रेसक विभाजन भऽ गेल। राष्ट्रीय आन्दोलन पर एहि विभाजनक प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। नेतालोकनि बादमे एहि तथ्यक अनुभव कयलनि, मुदा ताधरि बहुत-किछु घटित भऽ चुकल छल।

महात्मा गांधीक प्रवेशसँ स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ एकटा नव दिशा भेटल। कहल जा सकै अछि जे गांधीजी चम्पारण आन्दोलनसँ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे व्यापक स्तरपर भाग लेब शुरू कयलनि। चम्पारणक किसान पर अंग्रेजक अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छल। राजकुमार शुक्ल गांधीजीकेँ चम्पारण अयबाक लेल बाध्य कऽ देलनि। गांधीजी "तिनकठिया" पद्धतिक विरोधमे काज करब शुरू कऽ देलनि आ अन्ततः चम्पारणसँ अंग्रेज बगान मालिककेँ भगयबामे सफल भेलाह। तकराबाद ओ गुजरातक अहमदाबाद तथा खेड़ामे आन्दोलन कयलनि। हुनक कार्यपद्धति प्रभावी सिद्ध भेल। तँ 1920 ई0 मे कांग्रेस असहयोग आन्दोलनकेँ स्वीकार कऽ लेलक। गांधीजी असहयोग आन्दोलनक मुख्य पुरोधा छलाह। अंग्रेजक संग असहयोग आ विदेशी वस्तुक बहिष्कार-ई कार्यक्रम सम्पूर्ण देशमे चलऽ लागल आ राष्ट्रीय आन्दोलनकेँ एहिसँ वेश बल भेटलैक। एकरा सविनय अवज्ञा आन्दोलनक पूर्वपीठिका सेहो कहल जा सकैत अछि।

स्वतंत्रता संग्राममे क्रांतिकारी युवकक भूमिका उल्लेखनीय अछि। प्रथम विश्वयुद्ध आ रूसी क्रांतिक बाद भारतमे सेहो क्रांतिकारी आन्दोलनक सूत्रपात भेल। रामप्रसाद विस्मिल अशफाक उल्लाखाँ, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, भगत सिंह, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त आ चन्द्रशेखर आजाद सदृश स्वतंत्रता-सेनानी लोकनि क्रांतिकारी कार्यकलापमे विश्वास रखैत छलाह । हिनका सभक बलिदानसँ स्वतंत्रता संग्रामकेँ जे गतिशीलता भेटलैक से स्वराज्यकेँ लग अनबामे सफल भेल।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमे सेहो बामपक्षक उदय भेल। समाजवादी विचारधाराक अगुआ

5B

बनलाह जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस। हिनका सभकेँ अनेक बिन्दु पर गांधीजीसँ वैचारिक मतभेद रहनि, तथापि 1936 ई0 आ 1937 ई0 मे जवाहरलाल नेहरू तथा 1938 ई0 आ 1939 ई0 मे सुभाषचन्द्र बोसक कांग्रेस-अध्यक्ष बनब साम्राजवादी विचारधाराक प्रभुत्वक प्रमाण थिक। नेहरू अपन कार्यकारिणी समितिमे आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण तथा अच्युत पटवर्धन सन समाजवादीकेँ रखलनि। बादमे नेहरू आ सुभाषचन्द्र बोसमे सेहो वैचारिक मतभेद भऽ गेल आ बोस स्वतंत्रता संग्रामकेँ क्रान्तिकारी मोड़ देबाक लेल अग्रसर भऽ गेलाह।

द्वितीय विश्वयुद्धक संग भारतीय स्वतंत्रता गतिमे तीव्रता आबि गेल। 1942 ई0 मे "अंग्रेज, भारत छोड़ू" क नारा देल गेल आ अन्ततः अंग्रेजकेँ भारत छोड़हि पड़लैक। भारत स्वतन्त्र भेल आ अपन संविधानक अनुसार शासन-तंत्रक शुभारंभ करबाक अवसर भारतवासीकेँ भेटलनि।

पन्द्रह अगस्त 1947 केँ भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्र भारतक संविधान बनयबाक लेल संविधान सभाक गठन कयल गेल । ई सभा अत्यन्त व्यापक ओ सम्पूर्ण संविधानक निर्माण कयलक। एहि संविधानक अनुसार 26 जनवरी 1950 केँ भारतीय गणतंत्रक स्थापना भेल।

26 जनवरी 1950 सँ लागू भारतीय संविधान विश्वक प्रायः सर्वाधिक मानवीय आ उदात्त संविधान अछि। वस्तुतः एहि संविधानक निर्मातागण सतर्क रहथि जे भारत सन विशाल आ विविधातापूर्ण देशक संविधान एहन होमक चाही जे तात्कालिक समस्यासभक समाधान मात्र नहि, अपितु स्थायी दिशा निर्देश प्रस्तुत करबामे समर्थ होइक। राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहरि आ विभिन्न देशक अनुभवक सन्तुलित समन्वय कयलेसँ एहन संविधानक निर्माण संभव छल। 395 अनुच्छेद आ 10 अनुसूची वाला लगभग 22 खंडमे विभक्त 400 पृष्ठक भारतीय संविधान एहने अछि।

एक दिस भारतीय संविधान ब्रिटिश कालमे भारतीय शासन लेल पारित विभिन्न अधिनियमक ऋणी अछि तँ दोसर दिस ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड आदि देशक संविधानक कतिपय विशिष्ट तथ्यकेँ एहिमे स्थान देल गेलैक। संविधान सभामे प्रारूप-समितिक अध्यक्ष डॉ0 भीमराव अम्बेदकर स्पष्टतः स्वीकार कयलनि जे," अपन नवीन संविधानमे जँ कोनो नव बात भऽ सकैत अछि तँ यैह जे ओहिसँ पहिने प्रचलित संविधान सभक त्रुटिक मार्जन कऽ देल जाय अथवा तकरा देशक आवश्यकताक अनुरूप बना लेल जाय।" चारूकात उपलब्ध नीक बातक समायोजनसँ जे विशाल संविधान बनल ताहिमे ब्रिटिश संसदीय

सर्वोच्चता, अमेरिकी संघात्मक व्यवस्था आ स्वतन्त्र आ निष्पक्ष न्यायालय एवं न्यायिक पुनर्निरीक्षणक सिद्धान्त , कनाडाक आदर्शपर संघ आ राज्यक बीच शक्तिक विभाजन, ऑस्ट्रेलियाक देखादेखी संघ आ राज्य दुनूक अधिकार क्षेत्र वाला समवर्त्ती सूची तथा आयरलैंडक अनुसरण करैत राज्य नीतिक निर्देशक सिद्धान्तक व्यवस्था कयल गेल।

निर्मित, लिखित आ सर्वाधिक व्यापक भारतीय संविधान वयस्क मताधिकार तथा एकल नागरिकतायुक्त लोकप्रिय प्रभुसत्ताक सिद्धान्त पर आधारित एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतान्त्रिक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष गणराज्यक स्थापना करैत अछि, जाहिमे अल्पसंख्यक तथा पिछड़ल वर्ग सहित सभक लेल मौलिक अधिकार आ सामाजिक समानताक सिद्धान्तक आधारपर एक कल्याणकारी राज्यक स्थापनाक आदर्श प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतीय संविधानक एहि समस्त विशिष्टताक उल्लेख अन्तिम रूपसँ स्वीकृत संविधानक प्रस्तावनामे भेल अछि।

भारतीय संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधानक विशिष्टतासभक उल्लेख एकर प्रस्तावनामे भेल अछि। वर्त्तमान भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक परिवेशमे प्रस्तावनामे उल्लिखित सामाजिक न्याय, मौलिक अधिकार तथा धर्मनिरपेक्षताक सिद्धान्त विशेष व्याख्याक अपेक्षा रखैत अछि। प्रस्तावनामे नागरिक लेल सामाजिक मात्र नहि अपितु आर्थिक आ राजनीतिक न्यायक बात सेहो कहल गेल अछि। लोकतान्त्रिक व्यवस्थाक संचालन लेल स्वतन्त्रता आ समानता तँ सर्वत्र मान्य रहल अछि, किन्तु भारतीय संविधानमे न्याय पर विशेष जोड़ देल गेल। सामाजिक न्यायसँ अभिप्रेत छल जे मनुष्य-मनुष्यमे जाति, वर्ग, अथवा आन कोनो आधार पर भेद नहि कयल जाय आ प्रत्येक नागरिककेँ उन्नतिक समुचित अवसर उपलब्ध होइक ई राज्यक दायित्व मानल गेल जे ओ दुर्बल वर्गक शोषण रोकय एकर विकास लेल विशेष यत्न तहिना करय हिनक आर्थिक न्यायसँ अभिप्रेत छल उत्पादनक आ न्यायोचित विभाजन आ राजनीतिक न्यायसँ तात्पर्य छल सब नागरिककेँ समान नागरिक आ राजनीतिक अधिकारक प्राप्ति ।

प्रस्तावनामे जाहि दोसर बात पर बल देल गेल से छल नागरिकक विभिन्न प्रकारक स्वतन्त्रता जकरा नागरिकक मौलिक अधिकार कहल गेल। विचार अभिव्यक्ति भाषण स्वनिर्माण आदि महत्त्वपूर्ण नागरिक स्वतन्त्रता अछि तँ मतदानमे भागलेब, प्रतिनिधि चुनाव नवीन निर्वाचनमे प्रत्याशी होयब, सार्वजनिक पद पर नियुक्ति लेल अभ्यर्थी होयब सरकारी नीतिक आलोचना करब आदि राजनीतिक स्वतन्त्रता कहल जाय सकैत अछि। एहि प्रकारक स्वतंत्रताकेँ संविधानमे मौलिक अधिकारक रूपमे परिगणित कयल गेल आ तकर संख्या 7 निर्धारित कयल गेल मुदा बादमे

सम्पत्तिक अधिकारकेँ एहि सूचीसँ हँटाय देलाक कारणे मौलिक अधिकारक संख्या 6 रहि गेल। एहि अधिकार सभक क्रियान्वयनक व्यवस्था तऽ संविधानमे कएले गेलैक अछि, विभिन्न परिस्थितिमे एकरापर प्रतिबन्ध लगयबाक व्यवस्था सेहो कयल गेल छैक। बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा अधिकार संग नागरिकक 10 मूल कर्त्तव्य सेहो सूची जोड़ि देल गेल छैक।

प्रस्तावनामे बियालिसम संवैधानिक संशोधन द्वारा एक अन्य महत्त्वपूर्ण वृद्धि धर्मनिरपेक्ष शब्दक कयल गेल छैक। ओना संविधानमे आरंभेसँ साम्प्रदायिक प्रतिनिधि समाप्त कऽ वयस्क मताधिकारक आधार पर संयुक्त प्रतिनिधित्वक पद्धति अपनाओल गेल। वस्तुत: ब्रिटिश शासनकालमे 1909 केर अधिनियम द्वारा साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वक पद्धति आरंभ कयल गेल छल जकर दुष्परिणाम स्वरूप भारतक विभाजन भेल।

उपर्युक्त सभ प्रावधानक माध्यमसँ वस्तुत: भारतीय संविधान एक लोककल्याणकारी राज्यक स्थापनाक प्रयास कयलक जाहिमे अल्पसंख्ययकक धार्मिक, भाषागत आ सांस्कृतिक हितक रक्षा कयल जा सकय तथा पिछड़ज जाति आ जनजातिक नागरिककेँ राजकीय सेवा, विधान सभा, संसद आदिमे विशेष संरक्षण देल जाइक। संविधानमे दलितोद्धार लेल अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण व्यवस्था अछि, जेना संविधानक सतरहम अनुच्छेदमे कहल गेल जे "अस्पृश्यताक अन्त कयल जाइत अछि आ कोनो रूपमे तकर आचरणक निषेध कयल जाइत अछि-एहन आचरण दंडनीय होयत", एही क्रममे नियोजित आर्थिक विकासक अवधारणाक प्रावधान कऽ भारतीय संविधान 'समाजवादी समाजक' स्थापनाक नीतिकेँ स्वीकार कयलक। संविधान सभामे प्रस्तावनाक प्रारूप पर विचार होयबाक काल भारतकेँ 'समाजवादी गणराज्य' कहबाक प्रस्ताव कयल गेल छलैक, मुदा तखन ई कहि एकरा अस्वीकार कऽ देल गेलैक जे आर्थिक विकासक नीति मुक्त छोड़ल जयबाक चाही, कहबाक तात्पर्य ई जे भारतीय संविधान आन देशक संविधान सभ जकाँ अपन नागरिक लेल मात्र राजनीतिक कानूनी समानतेटा पर नहि सामाजिक समानता पर सेहो बल दैत अछि।

शब्दार्थ

निरापद - निर्विघ्न

अदम्य - जकरा दबाओल नहि जा सकय

मुखर - स्पष्ट; वाचाल

पराकाष्ठा - अन्तिम सीमा

सर्वाधिक - सभसँ वेशी

मार्जन - शुद्धिकरण

अभिप्रेत - तात्पर्य

प्रावधान - व्यवस्था

अस्पृश्यता - छुआछूत

दुष्परिणाम - अधलाह परिणाम

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) सिपाही विद्रोह कहिया भेल छल ?

(क) 1944 (ख) 1856

(ग) 1857 (घ) 1861

(ii) बंग-भंग आन्दोलन कहिया भेल ?

(क) 1905 (ख) 1906

(ग) 1907 (घ) 1908

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(i) अवकाशप्राप्त अंग्रेज आइ0 सी0 एस0 अधिकारी ..... कांग्रेसक स्थापना कयनिहार प्रमुख व्यक्ति छलाह।

(ii) भारत छोड़ो आन्दोलन ..... ई0 मे भेल।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध / अशुद्ध निर्दिष्ट करू -

(क) कांग्रेसक कलकत्ता अधिवेशनक अध्यक्ष छलाह पं जवाहर लाल नेहरू।

(ख) भारतीय संविधानमे 395 अनुच्छेद अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय कांग्रेसक स्थापना कहिया भेल ?

(ii) भारत कहिया स्वतंत्र भेल ?

(iii) संविधान सभामे प्रारूप समितिक अध्यक्षके छलाह ?

(iv) भारतक संविधान लिखित अछि वा अलिखित ?

(v) कोन सैनिक मेरठक सैनिक छावनीमे विद्रोह कयने छलाह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामपर एक छोट निबन्ध लिखू।

(ii) भारतक संविधानक विशेषताक वर्णन संक्षेपमे करू।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे गांधीक योगदानक उल्लेख करू।

(iv) गरमदल आ नरम दलक की तात्पर्य अछि?

(v) भारत छोड़ो आन्दोलनक वर्णन करू।

6. निम्नलिखित संज्ञासँ विशेषण बनाउ -

अधिकार, राष्ट्र , समूह , घोषणा , शासन

गतिविधि -

(i) एक स्वतंत्रता सेनानीक जीवनवृत्तक वर्णन करू।

(ii) महात्मा गांधीक आन्दोलन संबंधी गतिविधिक संकलन करू।

(iii) मौलिक अधिकारक आवश्यकता पर अपन विचार प्रकट करू।

7. स्वतन्त्र एवं परतन्त्रमे अन्तर स्पष्ट करू।

निर्देश –

(i) गरमदल एवं नरमदल वर्गमे तैयार कराय शिक्षक छात्र लोकनिक बीच वार्त्तालाप कराबथि।

(ii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे भाग लेनिहार महापुरुषक एक सूची बनाउ।

(iii) स्वतन्त्रता आन्दोलनमे प्रेरणादायक कविताक पाठ शिक्षक छात्र लोकनिक द्वारा कराबथि।

(iv) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक संस्थापक ए० ओ० ह्यूमक जीवनी शिक्षक छात्र लोकनिकेँ सुनाबथि।

महेन्द्र मलंगिया

महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्यक एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। हिनक जन्म मलंगिया (मधुबनी) मे 20 जनवरी 1946 ई0 मे भेल अछि। मैथिल समाजक विभिन्न समस्या पर लिखल हिनक नाटककेँ अभूतपूर्व मंचीय सफलता भेटल। हिनक 'ओकर आँगनक बारहमासा', जुआएल कनकनी, गाम नै सुतेयै, काठक लोक, ओरिजनलकाम, राजा सलहेस, कमलाकातक राम-लक्ष्मण असीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोर मे, पूष जार की माघ जार, खिच्चड़ि आदि प्रसिद्ध अछि।

हिनक अनेकानेक एकांकी, नुक्कर नाटक ओ रेडियो नाटक लोक प्रिय भेल अछि। मैथिली नाटक ओ एकांकीकेँ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करौनिहार मलंगियाजी एक सफल सम्पादक छथि।

अनेकानेक संस्थासँ सम्बद्ध मलंगियाजी प्रबोध साहित्य सम्मान, यात्री चेतना पुरस्कार, चेतना समिति सम्मानक संगहि अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थासँ सम्मानित भेल छथि।

प्रस्तुत एकांकीमे गाम-घरक ज्वलन्त समस्या पर विचार कयल गेल अछि। ग्रामीण लोकनि सरकारी सुविधा पर निर्भर करैत छथि। स्कूल भवनक अभावमे धीयापूताक पढ़ाइ सुचारू ढंगसँ नहि होइत अछि। मास्टर साहेब ग्रामीण लोकनिकेँ लाख अनुनय विनय करैत छथि विद्यालय भवन बनेबाक हेतु, मुदा हुनका सफलता नहि भेटैत छनि। एक गोटे अपन दरबज्जा पर नेना सभकेँ पढ़ेबाक किछु दिन लेल अनुमति तँ देलनि, मुदा ओ बादमे पाछू हटि गेलाह। लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत भेल। इएह एहि एकांकीक कथ्य अछि।

लेभराह अन्हारमे एक टा इजोत

पात्र :

मास्टर, किछु छात्र तथा किछु ग्रामीण।

(मंच; अंग्रेजीक VI अक्षरमे बाँटल। ओहिपर निम्नांकित दृश्य बनाओल-

(बीचवला भागमे दृश्य एक : एकटा गाछ।)

ओकर नीचाँ साफ-सुथरा। गाछक जड़िसँ किछु हँटिक' एकटा बाँहिवला कुर्सीक राखल। गाछ तथा कुर्सीसँ ओङठाओल क्रमशः एकटा छत्ता, छड़ी। कुर्सीक कातमे राखल तीनटा रजिस्टर। तीन पाँतीमे छोट-छोट बोरासभ ओछायल। पहिल पाँतीक बोराक अग्रिम भागपर किताब तथा कापी। एम्हर दुनू पाँतीक बोराक अग्रिम भाग पर सिलेट, कापी तथा किताब।

एक कातक भागमे दृश्य दू : एकटा छोट-छीन दलान। ओहिमे एकटा चौकी तथा आर्मबेंच। दलानेक एक कोनमे किछु घास-पात। चौकीपर आछाओन तथा गेरूआ मोड़ल राखल।

दोसरा कातक भागमे दृश्य तीन : एकटा घरक बाहरी दुआरि जे चाहक दोकानक रूपमे व्यवहार कयल जाइछ। कोइलाक चूल्हिपर दूटा चाहक केटली तथा दूधक सस्पेन चढ़ल। एक्केटा तख्ताक एकटा मचान बनाओल। ओहिपर सात आठ टा शीशाक छोटका गिलास, चीनीक डिब्बा, चाहक डिब्बा तथा चाहक छन्नी राखल। एकटा टेबुलपर दुटा बोइयाममे बिस्कुट तथा पानक सरमजाम सभ राखल। दुआरिक निच्चाँमे दूटा बेंच तथा दूटा पुरान कुर्सी राखल।

पात्रक प्रथम स्थिति पहिल दृश्यपर : मास्टर साहेब कुर्सीपर आ छात्र सभ बोरापर बैसल अछि। किछु छात्रक आगूमे किताब, कापी आ सिलेट छैक।

(प्रकाशक स्थिति : मात्र दृश्य एक आलोकित होइछ, दृश्य दू आ तीन पर अन्हार)

पर्दा हँटैत अछि

मास्टर – (निचला रजिस्टर उठा क') ..... आब वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ हाजरी बजै जाइ जो।

(पछिला पाँतीक छात्र सभ किछु साकांक्ष भ' जाइछ, मुदा बिचला आ

अगिला पाँतीक छात्र सभ कचबच करैत अछि ।. छड़ीसँ कुर्सीक पौआ ठोकैत हल्ला बन्न कर, नहि तँ पिटबौक।)

(सभ छात्र शान्त भ' जाइछ। रजिस्टर उघारिक' हाजरी लैत) रौल नम्बर एक।

छात्रएक – मास्टर साहेब! ओ नहि आयल।

मास्टर – (रौल नम्बर एक कलम रोपिक') किऐक ?

छात्रएक – ओकर बाबू कहलकैक जे आइ नहि जो।

मास्टर – से किऐक ?

छात्रएक – मेघ लागल छैक। ओहिठाम गीदड़ बनबाक काज नहि छैक।

मास्टर – एखन कहाँ वर्षा होइत छैक जे ?

छात्र दू – (दृश्य दू दिस आङुरसँ संकेत करैत) हे मास्सहेब ! रजबाक दलान दिस देखियौ, केहन जोर मेघ उठलै - ए।

(सभ छात्र ओम्हरे तकैत अछि आ अपन-अपन किताब सम्हार' लगैछ।)

मास्टर – तोँ सभ हल्ला ..... रे, किताब किऐक सम्हारैत छेँ ?

छात्र तीन – मास्टरसाहेब ! वर्षामे भीजि जायब।

मास्टर – वर्षा जखन औतेक तखन । एखन की थिकैक ?

छात्र तीन – मास्साहेब ! ओहू दिन इऐह कहलिऐ आ हमसभ भीजि गेलहुँ।

मास्टर – बच्चामे सहल रहतौक तँ बढ़िया होयतौक।

(छात्रसभ एक दोसराक मुँह ताक' लगैछ। मास्टर साहेब पुन: हाजरी लैत छथि। छात्रसभ उठि-उठिक' उपस्थित श्रीमान् करैत अछि।)

रौल नम्मर पाँच।

छात्र दू – मास्साहेब ! ओ आब एहि स्कूलमे नहि पढ़त।

मास्टर – एहीमे नहि पढ़त तँ कत' पढ़त ?

छात्र दू – मधुबनी । ..... ओ कहलकै जे एहिठाम इसकूल-तिसकूल छैक नहियेँ। बरिसातमे बड़ बाधा होइत छैक।

छात्र तीन – हँ, मास्साहेब ! ओकर बाबू सभ दिन काजपर जाइत छैक। ओकरो लेने जयतैक आ लेने औतैक।

मास्टर – हूँ; हमर एहि गाममे जमीन अछि जे हम स्कूल बना दियौनि।

(छात्रसभक पुनः कचबची बढ़ि जाइत छैक। मास्टर साहेब छड़ीसँ कुर्सीकेँ बजबैत छथि।)

हल्ला शान्त ! ..... हल्ला शान्त !!

(सभ छात्र चुप भ' जाइत अछि। हाजरी लैत) रौल नम्मर सात .....रौल नम्मर सात।

छात्र चारि – मास्साहेब ! ओहो भरिसक नहि पढ़त। ओकर माय कहैत छलैक जे गामक स्कूलमे पढ़ाई तढ़ाई होइत छैक नहियेँ आ ..... बेसी छुटिये रहैत छैक।

मास्टर – (किंचित क्रोधसँ निच्चाँमे रजिस्टरकेँ पटकैत) स्कूलक कारणेँ पढ़ाई नहि होइत छैक तँ हम की करियौक ?..... कपार फोड़िक' मरि जाउ ?

(छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

छात्र पाँच – मास्साहेब ! स्कूलक घर कहिया बनतैक ?

मास्टर जहिया घोड़ा पाउज करतैक।

छात्र पाँच – घोड़ा कहिया पाउज करतैक ?

मास्टर – जहिया स्कूल लेँ क्यो जमीन देतैक।

(छात्र एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ। आवेशक तनाव मुँहपर आनिक') रे, गप्पे करबाक छौक त' एहिठाम किऐक अयलेँ अछि ?

छात्र एक – (छात्र दूकेँ संकेत क') ई कहैत छैक जे घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र दू – मास्साहेक! अहाँ काल्हि कहलिऐक नहि जे .....

मास्टर – हँ हँ, ठीके कहलिऐक । घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! अहाँ हमरासभकेँ ठकैत छी। स्कूल नहि बनतै।

मास्टर – आशा तँ हमरो नहि अछि, मुदा .....

(मास्टर साहेब उठि क' छात्रक चारू भाग टहलि जाइत छथि। पुनः

अगिला पाँतीक छात्रक आगूमे ठाढ़ भ' जाइत छथि । अगिला पाँतीक छात्र सभसँ) तौँ सभ कल्हुके सिखौलहाकेँ दोहरा क' लिख। तखन आगू देखा देबौक। (दोसर पाँतीक छात्रसँ) तौँ सभ अभ्यास बीसक हिसाब बना।

(दुनू पाँतीक छात्रसभ अपन कार्यमे लागि जाइत अछि। मास्टर साहेब आबिक' कुर्सीपर बैसि जाइत छथि)

वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ लिखना लबै जाइ जो (छात्र एक उठिक' तेसर पाँतीक छात्रसभसँ लिखनाक कापी असूल करैत अछि)

मास्टर – किऐक रे ?

छात्र चारि – मास्साहेब ! हम लिखने छलहुँ । गामेपर बिसरि, गेलहुँ।

मास्टर – हँ, सभदिन तोहर एहने-एहने बहन्ना होइत छौक । ..... एम्हर अबै।

(छात्र चारि डरसँ सर्द भेल मास्टर साहेब लग जाइत अछि) (छड़ी देखाक') ई छड़ी देखैत छही ?..... दोसर दिनसँ एहन बहन्ना बनयबेँ तँ बड़ पिटान पिटबौ । जो ।

(छात्र चारि मुस्कुराक' पुनः यथावत् बैसि जाइत अछि)

ई बढ़लापर बड़ पैघ नेता होयतैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! जे ठकैत छैक से नेता होइत छैक ?

मास्टर – हूँ।

(छात्र दू सभ कापी असूलिक' मास्टर साहेबक हाथमे द' दैत अछि आ अपने कातमे ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब ऊपर-झापर पढ़िक' दस्तखत कर' लगैत छथि।)।

छात्र चारि – (छात्र तीन दिस संकेत क')। मास्साहेब ! ई हमरा गारि पढ़ै ए।)

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) की रे दारोगा साहेब ! गारि बजैत छेँ हड्डी तोड़ि देबौक।

छात्र तीन – नहि मास्साहेब ! ई झुट्ठे कहै-ए।

मास्टर – (पूर्ववत् स्थितिमे अपनाकेँ रखैत) की रे ओकील साहेब ! ओकालति करबा

छौक ?

छात्र पाँच – (छात्र छौ दिस संकेत क' क') मास्साहेब! ई कहै-ए, हिसाब नहि बनायब।

छात्र छौ – नहि मास्साहेब ! हम बनबैत छी।

मास्टर – नहि, यदि मेहनतिसँ डर लगैत होउक तँ पठा दियौक कोनो हाइस्कूल वा कालेजमे। फाँकी अपन दैत रहि हँ।

छात्र तीन – मास्साहेब !.....

मास्टर – (अकछिक' डाँटल स्वरमे) फेर मास्साहेब-मास्साहेब तखनसँ करैत अछि! आब क्यो मास्टरसाहेब करबँ तँ पिटबौ। चुप-चाप अपन काज कर।

– (कापी सही क' क' दैत छथि । छात्र दू सभकँ बाँटि दैत अछि)

वर्ग तीनक विद्यार्थीसभ एम्हर अबैत जाइ जो ।

– (पछिला पाँतीक छात्रसभ आबिक' मास्टर साहेबकँ घेरि लैत अछि। मास्टर साहेब संकेतसँ सभ छात्रकँ मुँहपरसँ हँटि जाय कहैत छथि । सभ छात्र आगूसँ हँटिक' दुनू कात ठाढ़ भ' जाइत अछि। पोथी उनटाक') शान्तिनिकेतन पढ़बाक छौक ?

एक छात्र – जी

मास्टर – (पोथीक कोनो निर्दिष्ट पन्ना उनटाक') शान्तिनिकेतनक माने होइत छैक शान्तिक घर। ई बंगालक बोलपुरमे छैक । ..... एहि विज्ञानक युगमे ई अपना ढंगक प्रथम स्कूल थिक। ..... एहि स्कूलमे विद्यार्थीसभ गाछपर आ गाछ तर बैसिक' पढ़ैत अछि। .....एकर स्थापना विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर कयलनि। ..... बुझलही ?

सभ छात्र – जी !

– (सभ छात्र अपन-अपन स्थानपर जाक' बैसि जाइत अछि। मास्टर साहेब उठिक' अगिला पाँतीक छात्रसभक सिलेटपर किछु-किछु लिखैत छथि । बीच-बीचमे 'एहिना क' लिख' बजैत छथि ।)

छात्र एक – (छात्र दू दिस संकेत क') मास्साहेब ! ई हमरा कहै-ए तोहर बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

छात्र दू – नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा कहलक।

(मास्टर साहेब उठिक' दुनू छात्र लग जाइत छथि)

मास्टर – की रे ?

छात्र एक – मास्साहेब ! ई हमरा .....।

छात्र दू – (छात्र एकक बात लोकैत) नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा.....।

मास्टर – (छात्र दूक बात लोकैत) हम सब बुझैत छिऐक, तोहरसभक बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

(दुनू छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

मुँह की तकै' छँ ? जहिना रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्ति-निकेतनक स्थापना कयलनि, तहिना तोरोसभक बाप एहि स्कूलकेँ शान्तिनिकेतनक रूपमे राख' चाहै छथुन।

छात्र तीन – मास्साहेब ! हमरा पोथीपर फूही पड़लै' ऐ

(छात्र तीनक पोथी कात-करौटक छात्रसभ देख' लगैछ। मास्टर साहेब मेघ दिस तकैत छथि।)

छात्र चारि – मास्साहेब ! हमरो कापीपर पड़लै-ऐ।

(सभ छात्र हड़बड़ा जाइत अछि आ अपन-अपन पोथी सम्हार' लगैछ। कचबची बहुत बढ़ि जाइत अछि।)

मास्टर – रे ..... एना .....।

छात्र पाँच – (दृश्य दू दिस संकेत करैत) मास्साहेब ! बाप रे बाप देखियौ केहन जोर मेघ ?

(मेघ गरजबाक ध्वनि सुनल जाइछ। सभ छात्र जे पंक्तिबद्ध छल, से अस्त-व्यस्त भ' जाइत अछि।)

छात्र एक – मास्साहेब ! हमसभ भीजि जायब। जल्दी छुट्टी द' दियौक।

मास्टर – .....उँ.....? उँ.....? उँ..... जाइ जो।

(सभ छात्र अपन-अपन पोथी आ बोरा लऽ कऽ जहिँ-तहिँ पड़ाइत अछि।

एहि क्रममे किछु छात्रक पोथी छूटि जाइत छैक। मास्टर साहेब विवशताभरल आँखिसँ सभ वस्तुकेँ सैँत' लगैत छथि। प्रकाश दृश्य एकपरसँ दृश्य दूपर चल जाइत अछि। ग्रामीण एक दलानमे प्रवेश करैत अछि। ओ मोड़ल ओछाओनकेँ पसारिक' सुतबाक उपक्रम करैछ। मास्टर साहेब रजिस्टर, किताब, छत्ता तथा छड़ी ल' क' दलानमे अबैत छथि।)

ग्रामीण एक – (कड़गर स्वरमे) मास्टर साहेब ! हम अपन दलानपर नहि पढ़बऽ देब।

मास्टर – हम वर्षा दुआरे अयलहुँ अछि।

ग्रामीण एक – विद्यार्थीसभ कहाँ गेल ?

मास्टर – सभ चल गेलैक।

(मास्टर साहेब रजिस्टर, पोथी तथा छड़ी' आर्मबेंचपर राखि दैत छथि। छता आर्मबेंचक पाछुमे लटका दैत छथि। ग्रामीण एक कोनटामे हुलकी मारिक' बाहरमे किछु तकैत अछि।)

ग्रामीण एक – हमरा भेल जे अहाँ फुसिये कहैत छी।

(मास्टर साहेब आर्मबेंचपर बैसि जाइत छथि)

ग्रामीण एक – हूँ, चिलकाक लाथेँ तँ चिलकाउर जीवे करैत छैक।

मास्टर – अपनेक कहबाक तात्पर्य नहि बुझलहुँ ?

ग्रामीण एक – वर्षा आबि गेलासँ अहुँकेँ आराम भेटिये जाइत अछि। एम्हर मङनीमे अपन दरमाहा .....।

मास्टर – (विक्षुब्ध भ' क' ग्रामीण एक दिस तकैत) तँ एहि वर्षामे हम की करियौक ? एहिमे यदि विद्यार्थीसभ पढ़य तँ पढ़ा दिऐक।

ग्रामीण एक – नहि, नहि, एहिमे कोना पढ़तैक ?

मास्टर – तखन अपने की कहल गेलैक जे.....। एखन अबैत देरी कहलहुँ जे दलानपर नहि पढ़ब' देब।

ग्रामीण एक – हम दलानपर कोना पढ़ब' देब ? लोक दलान बन्हने अछि अपन सुख ले' कि ..... ! की गाममे आर दलान नहि छैक ?

मास्टर – सभ तँ सैह कहैत छथि।

(मास्टर साहेब रजिस्टर उनटाक' किछु-किछु भर' लगैत छथि)

ग्रामीण एक – तखन हमरे कोना कहैत छी जे.....। सभसँ बुड़िबक हमहीँ छी ?.....की हमरे धीया-पूता पढ़ैत अछि ?

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) आखिर बच्चा सभ तँ अपनेक गामक थिक।

ग्रामीण एक – मूड़ी मारू बच्चासभकेँ । ओहि दिन पड़ल रही से ततेक ने कचबच कयलक जे.....। तखन दलान बान्हिक' कोन सुख भेल ?

(चुप्पी । ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकू बाहरक' लगब' लगैत अछि)

एक दिन पढ़ब' देलहुँ, दू दिन पढ़ब' देलहुँ..... आ एना जे सभ दिन हमरे दलानपर कहब से तँ पार नहि लागत।

(चुप्पी। मास्टर साहेब दोसर रजिस्टर उनटा क' किछु लिख' लगैत छथि ! ग्रामीण एक तमाकू लगबैत रहैत अछि। एहि क्रममे तमाकू गर्दा नाकमे लगा लैत अछि।)

सरकार एकटा स्कूल बना देतैक से नहि होइत छैक।

मास्टर – अपनेलोकनिक काज अछि से तँ करिते नहि छी। तखन सरकारकेँ कोन गर्ज छैक जे.....

ग्रामीण एक – हमर व्यक्तिगत रहैत तँ भ' गेल रहितैक, मुदा ई तँ छैक दसगर्दाक काज, तखन दसगर्दाक काज ले' हमहीँ किऐक.....

मास्टर – एहन भावना राखि कोना कोनो दसगर्दाक काज होयत?

ग्रामाण एक – नहि होयतैक तँ नहि होउक। (ग्रामीण एक ठोरमे तमाकू राखि क' चौकीपर पड़ि रहैत अछि) सरकारो आन्हर अछि। जत' स्कूल नहि छैक ओत' मास्टर किऐक ध' दैत छैक?

मास्टर – रोकि देल जाओ ने !

ग्रामीण एक – नहि, नहि हम अहाँ द' नहि कहलहुँ। कतेको ठाम एहिना चलैत छैक।

मास्टर – जाहि ठामक जनते चौपट्ट छैक, ओहि ठाम .....

ग्रामीण एक – एह ! घुमा-फिराक' जनतेक दोष।

मास्टर – सरकारक एक्को पाई दोष छैक तँ..... (किछु क्षणक बाद) दोष एतबे छैक जे नि:शुल्क शिक्षा देबाक हेतु शिक्षक द' दैत छैक।

(ग्रामीण एक पट द' बिच्चे दलानपर थूक फेकैत अछि। मास्टर साहेब कन्हुआकेँ देखि पुन: कार्यमे व्यस्त भऽ जाइत छथि।

ग्रामीण एक – मास्टर साहेब ! एक टा काज भ' सकैत अछि ?

मास्टर – (रजिस्टर बन्न क' क' उत्सुकतासँ ग्रामीण एकक मुँह तकैत) की ?

(ग्रामीण एक उठिक' बैसि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम दलान पढ़ब' ले' देब। मुदा, सरकारसँ लिख-पढ़ी क' भाड़ाक रूपमे किछु..... अहाँ तँ देया सकैत छी!

मास्टर – ई कोना भ' सकैत छैक ! एहन नियमे नहि छैक जे .....।

ग्रामीण एक – सैह हम कहलहुँ जे..... यदि.....।

मास्टर – एहन कोनो उपाय रहितैक तँ हम बाज नहि आयल रहितहुँ.....तखन एकटा भ' सकैत छैक।

ग्रामीण एक – (उत्सुकतासँ मास्टर साहेबक मुँह तकैत) की ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ एक एक रुपैयाक महिना देअय तँ..... (किछु क्षणक बाद) मुदा ओहो होब' वला नहि अछि। छमाही परीक्षाक फीस एखन धरि कैक टा विद्यार्थी रखनहि अछि। (किछु क्षणक बाद) दोसर, गार्जियनोसभ.....

ग्रामीण एक – नहि होब' वला अछि तँ चर्चे छोड़ू'

(मास्टर साहेब उठिक' कोनटा देने किछु तकैत छथि। पुन: बीच दलानमे अबैत दथि)

मास्टर – एकटा काज कयल ने जाओ।

ग्रामीण एक – की ?

मास्टर – पार लगाक' अपने दलान देल ने जाओ!

ग्रामीण एक – (किछु सोचैत) से.....से भ' सकैत अछि। (पुनः किछु सोचैत) मुदा, ओहन दलान तँ गाममे तीनिये ँ चारिटा अछि।

मास्टर – जतबे छैक, ओतबेमे पार लागि जयतैक।

ग्रामीण एक – (पुनः किछु सोचिक') हँ यौ मास्साहेब! सत्त पूछी तँ दलान देबामे कोनो हर्ज नहि, 'मुदा .....।'

मास्टर – की ?

ग्रामीण एक – आब देखियौ-भादवमे आँसु-मड्डुआ होयत-फेर अगहनमे धान-तान रहत। सभ हमर दलानेपर रहैत छैक। विद्यार्थीसभ केहन बानर होइत छथि से तँ बुझले अछि।

मास्टर – एकर जिम्मा हम लैत छी। एक्को रत्ती किछु नोकसान नहि होयत।

ग्रामीण एक – एह ! अपने कहब से मानब !

(नेपथ्य सँ- 'हे..... हे.....हे.....घुम रे.....घुम रे.....ई चमरा पेटक शब्द सुनल जाइछ। ग्रामीण एक उठिक' कोनटा देने तकैत अछि।) ई मालबला.....। (किछु क्षणक बाद बीच दलानमे आबिक') मेघ बहि गेलैक । बेकारे छुट्टी द' देलिऐक।

मास्टर – फूँही पड़' लगलै तँ हम की करितिऐक ?

ग्रामीण एक – एक-दू टा फूँहीसँ विद्यार्थीक देह नहि गलि जैतैक।

मास्टर – हम नहि जनलिऐक जे फूँहिये पड़िक' रहि जयतैक।

(मास्टर साहेब अपन सभ समान सम्हारैत छथि । ग्रामीण एक चौकीपर बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण एक – फेर पढ़ब' जाइत छिऐक ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ आब नहि ओतैक।

ग्रामीण एक – कतेक बाजल अछि ?

मास्टर – सी सामान पजियाक', (घड़ी देखैत) डेढ़।

मास्टर – (ग्रामीण एककेँ कन्हुआ क' देखि) हूँ।

(मास्टर साहेब चल जाइत छथि। ग्रामीण एक चद्दरि तानिकेँ सुतबाक उपक्रम करैत छथि)

ग्रामीण एक – एह ! क्यो देख' वला नहि।

(ग्रामीण एक मुँह झाँपिक' सूति रहैत अछि। दृश्य दूपर अन्हार पसरि जाइछ । किछु क्षणक बाद ग्रामीण एक उठिक' चल जाइत अछि। दृश्य तीनपर पहिने ग्रामीण सात आबि जाइत अछि। ओ अपन चाहक केटलीकेँ छूब'-छाप' लगैछ। तकर बाद एक-एक ग्रामीण सभ आबिक' क्रमश कुर्सी आ बेंचपर बैसैत अछि) तत्पश्चात् प्रकाश धीरे-धीरे दृश्य तीनपर पसरि जाइछ।

ग्रामीण दू – हमरालोकनि किऐक बजाओल गेलहुँ अछि ?

ग्रामीण एक – हमरा कहलनि जे अपनेलोकनि चलू, हम आर लोककेँ बजौने अबैत छी ?

(मास्टर साहेब आबिक' ठाढ़ भ' जाइत छथि आ एक बेर सभकेँ तकैत छथि ।)

मास्टर – सभगोटे तँ आबिये गेलहुँ। एक दू गोटे आर अबैत छथि। किछु गोटे कहलनि जे हमरा फुर्सतिये नहि अछि।

ग्रामीण एक – तखन कोना भेल ?

मास्टर – हम जबर्दस्ती कोना अनियौन ? औताह तँ अपने विचारेँ ।

(मास्टर साहेब बीचमे चुक्कीमाली भ' क' बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण दू – एह ! ऊपरे किऐक ने बैसलहुँ ?

ग्रामीण दू पहिने धकियाक' जगह बनयबाक प्रयास करैछ, मुदा जगह नहि होयबाक कारणेँ अपने उठबाक उपक्रम करैत अछि।

मास्टर – नहि, नहि ..... अपने बैसल जाओ।

(मास्टर साहेब उठिक' आधा उठल ग्रामीण दूकेँ बैसबैत छथि।)

ग्रामीण तीन – ई बैसार तँ जेठरैयतेक दरबज्जापर करितहुँ । एहिठास बैसौक दिक्कत .....

ग्रामीण चारि – ओहिठाम लक्ष्मणजी नहि जैतथिन ।

ग्रामीण पाँच – अयँ ! एखन धरि भँड़ा -महिसिक कानि छनिहँ।

ग्रामीण दू – नहि, से तँ इऐह ठीक छैक। एहिठाम चाहो पीबाक लाथेँ.....आ ओना आइ-काल्हि के जाइत छैक मिटिंगमे ?

(ग्रामीण एक आ दू फूसुर-फूसुर किछु गप्प करैत देखल जाइछ । मास्टर साहेब पुन: ओहिना बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण तीन – बेदा भाइ ! तमाकू दहक ।

ग्रामीण एक – अपने दहक।

(ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकूक डिब्बा बाहर करैत अछि आ ओकरा खोलिक' देखा दैछ) नहि छह।

ग्रामीण तीन – हमर एकदम तीत लगैत छैक।

ग्रामीण एक – तोँ लोककेँ ठकबाक नीक उपाय सोचने छह।

ग्रामीण तीन – आ तोँ नहि ? दहक दोसर डिब्बामे सँ।

(ग्रामीण एक आ तीन क्रमश: अपन दाँत चियारि दैत अछि।)

ग्रामीण एक – तमाकू तँ चाह पीबिक' खयबामे बढ़ियाँ लगैत छैक।

ग्रामीण चारि – पिअयबहक ?

(ग्रामीण सात देबालमे ओङठिक' ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब बिचला आङुरसँ निच्चाँमे किछु लिख' लगैत छथि।)

ग्रामीण एक – हम ? हमर कोन माय मुइली अछि ?

ग्रामीण चारि – तँ .....।

ग्रामीण दू – (ग्रामीण चारिक मुँहक बात लोकैत) सत्त पूछी तँ ई मास्टरे साहेबक काज छनि। तेँ हिनके पिअयबाक चाही।

ग्रामीण पाँच – हिनक कोन काज छनि ? स्कूल बनतह तँ अपनेसभक बच्चा पढ़तह।

ग्रामीण दू – से तँ बुझलहुँ मुदा, ... नहियो छैक तँ बच्चासभ कहुना क' पढ़िये लैत अछि।

ग्रामीण एक – बाहरमे हिनका अवस्से लोक कहैत होयतनि जे कहेन स्कूलमे छी जकरा एकटा घरो नहि छैक। ..... तखन हिनको कोनादन लगैत होयतनि। बनि गेलासँ हिनको छाती फूलि जयतनि जे .....।

ग्रामीण दू – से तँ ठीके।

ग्रामीण तीन – छाती फुलनि वा नहि, मुदा आराम हिनके होयतनि। तँ चाह आइ इऐह पियाबथु।

मास्टर – (बिक्षुब्ध नजरि सभ ग्रामीणपर फेरिक') बनबह हो चाह।

ग्रामीण सात – कैकटा ?

मास्टर – गनि लहुन ने !

(ग्रामीण सात गनबाक क्रममे सभकेँ देखि लैत अछि आ अपन काजमे जुटि जाइछ। ग्रामीण छओ प्रवेश करैत अछि। एकटा कुर्सीपर बैसल ग्रामीण उठि जाइछ। ग्रामीण छओ ओहिपर बैसि जाइत अछि। ग्रामीण चारि आ पाँच किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

(ग्रामीण सातसँ) राजकुमार ! एकटा बैस' ले' किछु लाबह।

(ग्रामीण सात नेपथ्यसँ एकटा स्टूल आनिक' द' दैत अछि। कुर्सी परसँ उठल व्यक्ति स्टूलपर बैसि जाइछ। ग्रामीण सात पुनः अपन काजमे लागि जाइत अछि।)

ग्रामीण छओ – ई गाम थिक ! एकटा स्कूल नहि बनि रहल अछि।

मास्टर – यदि स्कूल नहि बनलैक तँ स्कूलक स्वीकृतियो तोड़िक' दोसर ठाम ध' देतैक।

ग्रामीण छओ – तखन आँखि खुजतैक लोकक।

ग्रामीण पाँच – मास्टरो साहेबकेँ बढ़ियाँ भ' जयतनि। चल जयताह एहि किच्किचसँ दोसरठाम।

मास्टर – (ग्रामीण सातसँ) एकटा चाहक कोटा आर बढ़ा दहक।

ग्रामीण चारि – की यौ मास्टर साहेब! सभ अबैत गेलाह ?

ग्रामीण दू – के अयलाह आ के नहि अयलह से तोँ नहि देखैत छहक ?

ग्रामीण चारि – एह ! बुड़िबक जकाँ गप्प नहि ने करी ! आखिर एहि बैसारक आयोजन तँ मास्टरे साहेब कयलनि अछि। तँ हिनकासँ पूछब हमर उचित ।

ग्रामीण दू – बेस, तोँही काबिल छह। आर सभ एम्हर बुड़िबके छैक।

(ग्रामीण पाँच आ तीन किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – आब गप्प सप्प छोड़ह! जाहि काज ले' जमा भेलहुँ अछि से करह !

ग्रामीण पाँच – (गप्प बन्नक') कह' ने ! हम तैयार छी ।

ग्रामीण एक – बढ़िया होयत जे चाहक सङे गप्प-सप्प शुरू करितहुँ। (ग्रामीण सातसँ) की हौ ? चाह भ' गेलह ?

ग्रामीण सात – हँ, हँ, भ' गेलह ?

(ग्रामीण सात गिलासमे चाह छान' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – तावत गप्पो चलय तँ हर्ज की ?

ग्रामीण चारि – हर्ज तँ कोनो नहि। ..... की यौ मास्टर साहब ! हमरा लोकनिकेँ किऐक बजौलहुँ अछि ?

मास्टर – सभ बात तँ अपनेलोकनि जानिते छी ।

ग्रामीण चारि – हमरालोकनि तँ जनैत छी बहुत किछु। तथापि अहाँ कहब तखन ने जे .....।

(ग्रामीण एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – एह, गप्प नहि करह। सुनह !

मास्टर – समस्या अछि स्कूलक घरक ।..... घरक अभावमे कोन -कोन दशा भ' रहल अछि से तँ अपनेलोकनिकेँ बुझले अछि। तँ अपने लोकनिसँ प्रार्थना अछि जे कतहु स्कूलक हेतु पाँच धूरि भूमि भेटय आ केहनो घर अपने लोकनि ठाढ़ क' दी !

(सभ ग्रामीण मूड़ि गोति लैत अछि। चुप्पी । ग्रामीण सात उभेरक हिसाबेँ सभकेँ चाह देब' लगैछ। सभ मूड़ि गोतिक' चाह पीबि' लगैछ।)

ग्रामीण छओ – (मूड़ी उठाक') सुनैत नहि गेलहक ?

ग्रामीण पाँच – (मूड़ी उठाक') सभ सूनलिऐक।

ग्रामीण चारि – (मूड़ीक उठाक') सभसँ पहिने जगह टेबल जाय।

ग्रामीण तीन – (मूड़ी उठाक') स्कूल जोगरक तँ कयकटा ने जगह छैक।

ग्रामीण छओ – बाजह ने !

ग्रामीण तीन – से तोँ नहि जनैत छहक ?

(चुप्पी । किछु गोटे कनाफुसकी कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जगह तँ कैकटा ने छैक -श्यामजीक जामुन तर, छेदू भाइक बसेढ़, सुन्दर लालाजीक बराड़ी, मन्नूक भीड़ी महेशक बारी .....।

ग्रामीण एक – आ तोहर कलमक कात नहि ?

ग्रामीण छओ – से हम कहाँ कहैत छियह नहि ..... ? ओहो छैक।

(चुप्पी। सभ गोटे चाहक चुस्की लैत एक दोसरक मुँह तकैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – एना कयने काज नहि चलतह। खेतो-पथार गेनाइहरमाद होइत अछि।

ग्रामीण छओ – तँ।

(चुप्पी। किछु गोटे चाह पीबिक' खाली गिलास निच्चाँमे राखि दैछ)

की ओ सुन्दर ाल जी ?)

ग्रामीण तीन – हमहूँ इऐह प्रश्न अहाँसँ करैत छी !

ग्रामीण छओ – तखन तँ बेकारे बेसैत गेलहुँ। छोड़ि दिय'।

ग्रामीण तीन – हूँ। अपन बेरमे छोड़ि दिय'।

ग्रामीण चारि – मन्नू बजैत नहि छह ?

ग्रामीण दू – तोँही बाजह ने !

ग्रामीण चारि – स्कूल नहि बनैक ?

ग्रामीण दू – अबस्स बनैक। दैत जइयौक जगह।

ग्रामीण तीन – से ककरा कहैत छिऐक ? अहीँ दियौक ने ? बड़ टोनगर जमीन अछि।

ग्रामीण चारि – की, हमरे बच्चा ओहि स्कूलमे पढ़त ?

(ग्रामीण चारि बेंचपरसँ उठिक' बिच्चेमे चुक्कीमाली भ' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण पाँच – से कहाँ क्यो कहैत अछि जे अहींक बच्चा पढ़त ? तखन जथेवाला जगह देथिन कि ..... (किछु क्षणक बाद) की यौ ! बेदा भाई ?

ग्रामीण एक – एकटा हमहीँ अहाँकेँ सुझैत छी।

(ग्रामीण एक ग्रामीण चारि जकाँ बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण एक – द' ने दियौक अहीँ?

ग्रामीण पाँच – हमरा देबामे कोनो हर्ज नहि, मुदा हम ओहिठाम बास ल' जायब।

(ग्रामीण पाँच ग्रामीण एक जकाँ उठिक' बैसि रहैत अछि।)

ग्रामीण एक – वैह बात तँ हमरो सङ अछि। ओहिठाम सभकेँ निर्वाह नहि होयतैक।

ग्रामीण दू – हमर समस्या ई अछि जे हमरा ओहिठाम मालक घर ल' जयबाक अछि।

(ग्रामीण दू ग्रामीण पाँच जकाँ उठि क' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण तीन – हम तँ जमीन द' दितहुँ , मुदा घरमे सभक विचार नहि छैक'। तखन हम ओहि ले' घरमे फूट करू से .....।

(ग्रामीण तीन उठि जाइत छथि।)

ग्रामीण चारि – हम खरिहान ओहिठाम नहि करितहुँ तँ भूमि देबामे कोनो हर्ज नहि छल।

ग्रामीण छओ – हम यदि दैत छी तँ हमर पर्दा-पोश मारल जाइत अछि।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – की औ मास्टर साहेब ! पानो चलतैक ?

(मास्टर साहब कोनो उत्तर नहि दैत अछि।)

ग्रामीण दू – मास्टर साहेबक काज होइते नहि छनि तँ .....।

ग्रामीण एक – हमरा की कहैत छह ?

ग्रामीण छओ – सभ तँ एहिना कहैत छैक ।

मास्टर – (विक्षुब्ध स्वरसँ) पान लगाबह।

(ग्रामीण सात पानें लगब' लगैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – हमर एकटा गप्प सुनह। सभमे चन्दा लगा दहक आ कतहु भूमि कीनि लैह।

ग्रामीण एक – एखन लोक खाय ले' मरैत अछि आ चन्दा दैत छैक।

ग्रामीण दू – पहिने तँ धनिकहे नहि देतैक।

ग्रामीण तीन – ई बात नहि चलतह। मामूली गमैया पूजामे बेहरी दैतेह ने रहैत छैक आ .....।

ग्रामीण चारि – तँ ओहिमे तँ एक्के -डेढ़ रुपैया लगैत छैक।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – (ग्रामीण दू सँ) मन्नू भाई । तोहर थान तर कादो भ' गेलह ?

ग्रामीण दू – ओह! पानिये ने लगैत छैक।

ग्रामीण छओ – एह! गप्प लेढ़ायल जाइत छह।

ग्रामीण एक – करह ने गप्प। हम तैयारे छी ।

(चुप्पी। ग्रामीण सात सभकेँ पान, सुपारि आ, जर्दा दैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – ने क्यो जगह देतैक आ ने चन्दा। तखन कोना बनतैक स्कूल ?

ग्रामीण एक – नहि बनतैक तँ नहि बनौक। हमरा धीया-पूताकेँ पढ़यबाक होयत तँ दरबज्जेपर मास्टर राखिक' पढ़ा लेब।

ग्रामीण दू – तँ।

ग्रामीण तीन – (पचद' पीक फेकैत) तोरासँ के मौर अछि ?

(ग्रामीण तीन उठि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम तोरा नहि कहै छिएह।

ग्रामीण तीन – आ हम तोरा कहलियह अछि ?

ग्रामीण पाँच – (पीक फेकिक') मारि करैत जाह।

(ग्रामीण चारि पीक फेकि प्रस्थान करैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जाइत छह ?

ग्रामीण चारि – (ठाढ़ भ' क') तँ । मङनीमे काज हरमाद होइत अछि।

(ग्रामीण चारिक प्रस्थान तथा ग्रामीण तीन जयबाक हेतु डेग बढ़बैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – तोहूँ जाइत छह ?

ग्रामीण तीन – नहि किछु होइत छैक तँ की करू ? तीनटा बेटा पढ़लक से कोन ई स्कूल छलैक ?

ग्रामीण पाँच – चलह। हमरे की अछि ?

(बेरा-बेरी सभ ग्रामीण चल जाइत अछि। मास्टर साहेब विक्षुब्ध भ' क' सभकेँ तकिते रहित जाइत छथि। ग्रामीण सात खूब जोरसँ भभाक' हँसैत अछि।)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! स्कूल बनि गेल ?

(मास्टर साहेब मूड़ी लटका क' जाय लगैत छथि)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! कने बाजार जयबै चाह-चीनी आन'।

(मास्टर साहेब अपन जेबी टोब' लगैत छथि। दृश्य तीनपर अन्हार पसरि जाइछ। प्रकाश दृश्य एकपर चल अबैत अछि। ओही प्रकाशमे गाछसँ टप-टप खसैत पानि आ खाली कुर्सी देखल जाइछ। किछु कालक बाद प्रकाश आस्ते-आस्ते क्षीण भ' जाइत अछि।)

(पर्दा खसैत अछि)

शब्दार्थ

आवेश	–	वेग
विवशता	–	लाचारी
चिलका	–	छोट बच्चा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -**

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू।

(i) मंच पर दृश्य बनल अछि।

(क) एकटा (ख) दूटा

(ग) तीनटा (घ) चारिटा

(ii) चाहक पाइ देलनि -

(क) ग्रामीण एक (ख) मास्टर साहेब

(ग) ग्रामीण पाँच (घ) ग्रामीण दू

2. निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) कोइलाक चूल्हि पर टूटा चाहक ..... चढ़ल छल।

(ख) घोड़ा कहिया ..... करतैक।

3. निम्नलिखितमे सही/गलतक चयन करू -

(क) गाछक जड़िसँ हँटि क' एकटा टेबुल राखल छल।

(ख) शान्तिनिकेतन बंगालक बोलपुरमे अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत ' एकांकीक लेखक के छथि ?

(ii) बीचवला दृश्यमे पढ़ाई कतय होइत छल ?

(iii) छात्र सभ कोन चीज पर बैसल अछि ?

(iv) शान्तिनिकेतनक अर्थ की होइत अछि ?

(v) चाह-पानक दाम के देलनि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकीमे लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(ii) ग्रामीण समस्या पर एक निबन्ध लिखू।

(iii) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकी सामाजिक जीवन दृश्य उपस्थित कएने अछि प्रमाणित करू।

6. निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू-

सर्द, हँसैत, धरती, ग्रामीण, इजोत, नि:शुल्क

गतिविधि -

(i) ग्रामीण पाठशालाक एक दृश्य बनाउ।

(ii) ग्रामीण लोकनिक मनोवृत्तिक चित्रण करू।

(iii) विद्यार्थी लोकनिक बीच ग्रामीण स्कूलक दशा पर भाषण प्रतियोगिता कराउ ।

निर्देश -

(i) शिक्षक विद्यार्थी लोकनिसँ ग्रामीण विद्यालय संबंधी कविताक पाठ कराबथि।

(ii) शिक्षक एक छात्रकेँ शिक्षक आ अन्यकेँ विद्यार्थी बना वर्गमे नाटक कराबथि।

(iii) शिक्षक छात्र लोकनिसँ दस गामक प्राथमिक स्कूलक सर्वे कराय ओकर प्रतिवेदन तैयार कराबथि।

अशोक

अशोक मैथिलीक यशस्वी लोकधर्मी रचनाकार छथि। मधुबनी जिलाक लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 कऽ हिनक जन्म भेलनि। विज्ञानक विद्यार्थी छलाह। रुचि आ प्रवृति छलनि साहित्य पढ़बाक आ लिखबाक। से छात्रावस्थेसँ साहित्य-रचना करय लगलाह। चाकरी भेटलनि सहकारिता विभागमे। ओहू ठाम सामान्य जनक साख बचयबामे लागल रहैत छथि। लोक-चिन्ता, लोक-हित आ लोक-उन्नति हिनक एकलव्य-दृष्टि छनि।

अशोक अनेक विधामे लिखैत छथि। चक्रव्यूह (कविता-संग्रह), ओहि रातिक भोर तथा मातवर (कथा-संग्रह) आ मैथिल आँखि (निबन्ध-समीक्षा) हिनक चर्चित पुस्तक छनि। पृथ्वी-पुत्र (ललितक उपन्यासक नाट्य रूपान्तर) तथा संवाद (संपादन) मैथिलीक बेछप पोथी अछि। पत्रिका-सम्पादनमे हिनक मौलिकता 'संधान' मे तँ देखार होइते अछि, 'घर-बाहर' सेहो ओहि क्षमता-प्रतिभाक साक्षी अछि। सोवियतसंघक यात्रा-कथा जतबे प्रकाशित अछि से बेजोड़ अछि।

'बाबाक आत्मीयता' अशोकक 'मैथिल आँखि' सँ लेल गेल अछि। बाबा माने यात्री नागार्जुन। आत्मीयता माने अपनापन। अपेक्षितारय। अशोकक कहब छनि जे यात्रीकेँ बुझबाक लेल, हुनक जीवन आ लेखनसँ परिचित होयबाक लेल आत्मीयता शब्दक व्याप्तिकेँ जानब जरूरी अछि। नीक रचनाकार होयबाक लेल नीक व्यक्ति होयब अनिवार्य अछि। नीक व्यक्तिक मतलब थिक संवेदनशील व्यक्ति, मनुष्यक सुख-दुखक भागीदार। क्षेत्र, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदिक सीमा मनुष्यकेँ बँटैत अछि, तोड़ैत अछि। राग-भावक हनन करैत अछि।

आजुक समयमे जखन सभ अपन-अपन सुख-सुविधा लेल अपस्याँत अछि- यात्रीक जीवन आ लेखन विश्व-बन्धुत्वक पाठ बनि कऽ सोझाँ अबैत अछि। दोसर बात ई अछि जे बाबाक जीवन आ लेखनमे, आचार या विचारमे भिन्नता नहि अछि। ओ पानि जकाँ पारदर्शी छथि। तँ ओ बच्चा-बुतरु, युवक-बूढ़, परिचित-अपरिचित सभक अपन समाङ छथि। सभक आत्मीय छथि।

प्रस्तुत निबन्ध बाबाकेँ बुझबाक आँखि दैत अछि।